OM 6 final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:06 AM Page 10

गुवाहाटी-असम। 'डेस्टिनी..मैटर ऑफ च्वाइस और चांस' सेमिनार का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. शीला, जस्टिस ए.के. गोस्वामी, ब्र.कु. डॉ. बनारसीलाल शाह, जस्टिस बी.के. शर्मा, ए.के. सिन्हा,चीफ कमिश्नर,इनकम टैक्स, अशोक वर्मा,डायरेक्टर,एयरपोर्ट ऑथोरिटी ऑफ इंडिया, राम निरंजन गोएनका,इंडस्ट्रीयलिस्ट एण्ड फेमस पोयेट, सरोज खेमका,प्रेसीडेन्ट महिला मंडल तथा अन्य।

नियामतों पर गौर करें

अपनी दिक्कतों के बारे में सोचने के बजाए अपनी सहूलियतों के बारे में सोचें। अपने इर्द-गिर्द के फूलों की खुशबू सूंघने के लिए वक्त निकालें। आप कई बार सुनते होंगे कि कोई आदमी दुर्घटना की वजह से अंधा या अपाहिज हो गया, लेकिन उसे हरजाने के तौर पर लाखों रुपये मिल गए। हममें से कितने लोग ऐसे आदमी की जगह लेना चाहेंगे? ऐसा चाहने वाला शायद ही कोई होगा। हम शिकायतें करने के इतने आदी हो गए हैं कि उन चीज़ों की ओर हमारी नज़र ही नहीं जाती, जो हमारे पास मौजूद हैं। हमारे पास ऐसी बहुत सारी चीज़ें हैं, जिनके लिए हमें शुक्रगुज़ार होना चाहिए।

इस तथ्य, ''अपनी दिक्कतों के बजाए सहूलियतों पर गौर करें'' तो इसका मतलब यह नहीं है कि हमें आत्मसंतुष्ट हो जाना चाहिए। अहसानमंद होने के नज़रिए का मतलब आत्मसंतुष्टि नहीं है। लोग किसी बात का मनचाहा मतलब कैसे निकालते हैं, यह जानने के लिए एक कहानी इस प्रकार है कि एक डॉक्टर को शराबियों के एक समूह को संबोधित करने के लिए मेहमान वक्ता के रूप में बुलाया गया। वह उनके सामने कोई ऐसा नमूना पेश करना चाहता था, जिससे उन्हें यह अहसास हो कि शराब सेहत के लिए नुकसानदेह होती है। उसने दो काँच के बर्तन लिए। एक में साफ पानी भरा और दूसरे में शराब भरी। उसने साफ पानी में एक केंचुआ डाला। वह आसानी से तैरता हुआ पानी के ऊपर आ गया। फिर उसने एक केंचुआ शराब में डाला और वह सबकी आँखों के आगे टुकड़े-टुकड़े हो गया। वह यह साबित करना चाहता था कि शरीर के अंदर शराब का ऐसा ही असर होता है। नमूना पेश करने के बाद उसने शराबियों के समूह से पूछा कि उन्हें इससे क्या सीख मिली। उसका सवाल सुनकर पीछे बैठे एक शराबी ने जवाब दिया, ''इसका मतलब यह है कि शराब पीने से हमारे पेट में कीड़े नहीं होंगे।'' क्या इस कहानी का यही संदेश है? बिल्कुल नहीं। किसी बात का मनचाहा मतलब ऐसे ही निकाला जाता है। हम वह नहीं सुनते, जो हमें सुनाया जाता है, बल्कि वह सुनते हैं, जो हम सुनना चाहते हैं।

हमें मिली बहुत सारी नियामतें छिपे हुए खज़ाने की तरह हैं। हमें अपनी दिक्कतों के बारे में नहीं, बल्कि अपनी नियामतों के बारे में सोचना चाहिए।

• लगातार ज्ञान हासिल करने का कार्यक्रम बनाइए

आइए, पहले हम अपनी कुछ गलतफहमियों को दूर करें। आम तौर पर माना जाता है कि हम स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। लेकिन यह एक महत्वपूर्ण सवाल है कि, '' क्या हम स्कूल-कॉलेजों में वास्तव में शिक्षा हासिल करते हैं?'' इस बात पर आम तौर पर सहमति है कि वहां शिक्षा कुछ ही लोग हासिल कर पाते हैं, और ज़्यादातर लोग उससे वंचित रह जाते हैं। इस बात का गलत मतलब न निकालें। हमें स्कूल-कॉलेजों में ढ़ेर सारी सूचनाएँ हासिल होती हैं। शिक्षित होने के लिए सूचनाएँ भी ज़रूरी हैं, लेकिन उसके साथ ही हमें शिक्षा के सही मायने भी समझने चाहिए।

बौद्धिक शिक्षा हमारे दिमाग पर असर डालती है, जबकि नैतिक शिक्षा हमारे मन को प्रभावित करती है। यदि शिक्षा मन को ट्रेनिंग नहीं देती, तो वह खतरनाक हो सकती है। अगर हम अपने दफ्तर, घर और समाज में लोगों के चरित्र का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें उन्हें एक स्तर तक नैतिक शिक्षा देनी ही होगी। ईमानदारी, दया, साहस, दृढ़ता और ज़िम्मेदारी जैसे बुनियादी गुण विकसित करने वाली शिक्षा बेहद ज़रूरी है।

हमें ज़्यादा अक्षर-शिक्षा की ज़रूरत नहीं, बल्कि चरित्र बनाने वाली शिक्षा की है। नैतिक स्तर पर शिक्षित आदमी ज़िंदगी में उस आदमी की तुलना में ज़्यादा कामयाबी और तरक्की हासिल कर सकता है, जिसे ज़्यादा अच्छी शिक्षा मिली हो, पर जिसके पास नैतिकता की पूँजी बिल्कुल न हो।

• नैतिकताविहीन शिक्षा

विश्वविद्यालय से युवक बहुत काबिल मगर पढ़े-लिखे जाहिल बनकर निकल रहे हैं क्योंकि हम युवाओं को नैतिकता का कोई आधार नहीं दे पा रहे हैं जिसकी उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा तलाश है।

असली शिक्षा आदमी के दिल और दिमाग, दोनों को ट्रेनिंग देती है। एक अनपढ़ चोर शायद मालगाड़ी से सामान ही चुराएगा, पर पढ़ा-लिखा चोर तो रेल की पूरी पटरी ही उड़ा ले जाएगा। हमें 'ग्रेड' नहीं, बल्कि ज्ञान और बुद्धिमता हासिल करने के लिए होड़ लगानी चाहिए। तथ्यों को जानने से ज्ञान हासिल होता है, और उनका सरलीकरण करने से समझदारी प्राप्त होती है। ज़्यादा सीखे बिना भी अच्छे ग्रेड और डिग्री तो मिल जाती है लेकिन सबसे अहम बात कोई सीख सकता है, तो वह यह है कि 'सीखने के सही तरीके को सीखें। लोग सूचनाओं को रटने की काबिलीयत को ही गलती से शिक्षा समझ लेते हैं। बिना मूल्यों के दिमागी शिक्षा समाज के लिए आफत को पैदा करती है।

• ज़रूरी कामों को पसंद करने की आदत डालें

जो ज़रूरी है उससे शुरु करें, फिर जो मुमकिन है वह करें, और आप अचानक पाएंगे कि आप नामुमकिन काम भी करने लगे हैं।

कुछ काम ऐसे होते हैं, जिन्हें हम पसंद करें या नापसंद पर वे हमें करने ही पड़ते हैं। जैसे कि एक माँ अपने बच्चे की देखभाल हर हाल में करती है। कोई ज़रूरी नहीं है कि इसमें उसे हमेशा सुख मिलता हो, बल्कि कई बार तो यह तकलीफदेह हो सकता है। लेकिन हम ऐसे ज़रूरी कामों को पसंद करना सीख लें, तो फिर नामुमकिन भी मुमकिन बन जाता है।

• अपने दिन की शुरुआत किसी सकारात्मक कार्य से करें

सुबह के वक्त सबसे पहले कोई अच्छी चीज़ पढ़ें, या सुनें। रात में अच्छी तरह सोने के बाद हमारा तनाव दूर हो चुका होता है, और हमारा अवचेतन मन किसी बात को बड़ी आसानी से कबूल कर लेता है। इससे दिन भर के लिए एक लय बन जाती है, और हमारी दिमागी सोच का ताना-बाना सही रूप ले लेता है, जिससे हमारा पूरा दिन अच्छा बन जाता है। खुद में बदलाव लाने के लिए हमें सोचे-समझे ढंग से कोशिश करनी होगी, और पूरे संकल्प के साथ अच्छे विचार और व्यवहार को अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाना होगा। सकारात्मक विचार और व्यवहार को अपनाने का अभ्यास रोज़ करें और इसे तब तक ज़ारी रखें, जब तक यह आदत न बन जाए। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के विलियम जेम्स का कहना है, ''अगर आपको अपनी ज़िंदगी बदलनी है, तो उसकी शुरुआत फौरन करें।'' अगर आप अब तक बताए जा चुके तरीकों पर अमल करें, तो आप अवश्य ही विजेता बन जाएंगे।

-- ब्र.कु.मोनिका, शांतिवन

कविनगर-गाज़ियाबाद(उ.प्र.)। ज्ञानचर्चा के बाद पूर्व जनरल वी.के. सिंह तथा उनकी धर्मपत्नी को ओमशान्ति मीडिया देते हुए ब्र.कु. राजेश। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता ।

लक्सर-हरिद्वार। गीता पाठशाला के उद्घाटन अवसर पर शिव ध्वज फहराने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में भाजपा नेता अजय वर्मा, ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

पिम्पलवाड-जलगांव(महा.)। उपसेवाकेन्द्र का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मिनाक्षी, ब्र.कु. हेमन्त,माउण्ट आबू, ओंकार भाई,ग्रामसेवक, ब्र.कु. वंदना तथा अन्य।

पुणे। विश्वविख्यात चित्रपट निर्माता,निर्देशक अदूर गोपाल कृष्णन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रूपा तथा ब्र.कु. दीपक।

डोंगेर नगर-रतलाम। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन अवसर पर बच्चों को पुरस्कार वितरण करने के पश्चात् समूह चित्र में सभी बच्चों के साथ जैन पब्लिक स्कूल के प्रिन्सीपल हरि प्रसाद वैष्णव, ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. सविता तथा अन्य।

नीलोखेरी-हरियाणा। खेलकूद प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए सेठ सुरेश चंद्र सिंगला, ब्र.कु. प्रेम, मेहरचंद, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. देवराज तथा ब्र.कु. गौरव।